Unit II

अहम्वाद (Egoism) - K. Frankena

यह एक स्वार्थवादि सिद्धान्त है जो मानता है कि मनुष्य को केवल अपने सुख या हित को ही अधिक महत्व देना चाहिए दूसरे के सुख को ध्यान में नहीं रखना चाहिए। मानव स्वभाव से ही स्वार्थी है और वह दूसरे के प्रति भलाई या परोपकार करता भी है तो भी अपने सुख को ही अधिक महत्व देता है और अपना लाभ निकालता है।

अहम्वाद मुख्य रूप से दो प्रकार का है।

1) नैतिक अहम्वाद
2) मनोवैज्ञानिक अहम्वाद

1) नैतिक अहम्वाद- (ETHICAL Egoism)

जिस सिद्धान्त को बटलर आत्मप्रेम फ्रायड अहम् कहता है उसी को जब हम नीति क्षेत्र मे लागू करते हैं तो वह नैतिक अहम्वाद बन जाता है। नैतिक अहम्वाद का अर्थ यह है कि व्यक्ति को अपने 'स्व' के लिये सुखों को चाहना चाहिये। यद्यपि हमेशा वास्तविक जीवन में 'नैतिक अहम्वादी' ऐसा करता हुआ न भी दिखे तो भी नैतिक अहम्वाद की मान्यता यही रहेगी।

नैतिक अहंवाद की मुख्य मान्यताए इस प्रकार हैं-

1) व्यक्ति को अपना और केवल अपना विकास करना चाहिए या यह भी कहा जा सकता है कि उसका सम्पूर्ण दायित्व अपने प्रति ही है।

2) किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति भलाई करते हुए या उसे सलाह देते हुए भी व्यक्ति को अपने स्वयं के हित को ध्यान में रखना चाहिये यानि दूसरों के लिये भलाई भी स्वयं के लिये ही हो।

जिस व्यक्ति के प्रति अहम्वादि कोई सलाह या निर्णय दे रहा हो उस स्थिति में उस व्यक्ति के प्रति नैतिक अहम्वादि को केवल स्वयं का ही ध्यान रखना चाहिये, अन्य का नहीं।

नैतिक अहम्वादि को यह स्वीकारना चाहिये कि उसका सुख या हित ही अंतिम सुख है किसी अन्य का नहीं।

ज्ञान यश, प्रसिद्धि, समृद्धि आदि सभी चीजे उसी के लिये है। इससे भिन्न इनका कोई मूल्य या महत्व नहीं है।

इन मूल मान्यताओं को देखने से यह स्पष्ट होता है कि नैतिक अहंवाद व्यक्ति को या उसके हित को ही सर्वोपरि मानता है।

बटलर ने इस सिद्धांत को आत्मप्रेम इसलिये कहा क्योंकि व्यक्ति स्वयं अपने आपको सबसे अधिक चाहता है।

आलोचना - कांट ने इस सिद्धांत की आलोचना की क्योंकि वह इसे बुद्धि आधारित नहीं मानता। उसके अनुसार बुद्धि कभी भी स्वार्थान्ध नहीं हो सकती।

इसलिये नैतिक अहंवाद के सिद्धांत को एक सही नैतिक सिद्धांत नहीं माना जाता।

मनोवैज्ञानिक अहंवाद - (PSYCHOLOGICAL Egoism)

यह मनुष्य के स्वभाव पर आधारित सिद्धांत है। यह मानता है कि मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा है कि वह स्वयं को ही सबसे अधिक चाहता है। इसलिए वही सिद्धांत इस बात के अनुकूल होगा कि जो इस मूल मान्यता के विपरित न हो।

मनोवैज्ञानिक अहंवाद की मूल मान्यताएं इस प्रकार है -

1) मनोवैज्ञानिक अहंवादि मानता है कि इच्छा हमारी आवश्यकता का आधार है। कुछ इच्छाएं मूल इच्छाओं में समाहित रहती है। यह मूल इच्छाएं भोजन, यश, प्रेम, पान इत्यादि से सम्बन्धित है जिन्हें प्राथमिक इच्छाएँ कहा जाता है। और हमारा सुख इनकी पूर्ति में ही निहित होता है।

2) व्यक्ति में जो सारी इच्छाएं निहित होती है। उन इच्छाओं का आधार विषय सुख नहीं होता अपितु ~~____~~ उनका केवल एक ही आधार होता है वह है आत्मप्रेम।

3) अपनी मूल इच्छाओं मे जब हम कुछ अन्य चीजों को जोड़ देते है तो ऐसा हम अपने आत्मप्रेम की संतुष्टी के लिये करते है।

4) आत्मप्रेम स्वयं में ही नहीं दूसरो मे भी निहित है। आत्मप्रेम का अर्थ मात्र इतना ही नहीं है कि हम अपने को चाहते है बल्कि इसमें यह भी शामिल है कि यदि हम दूसरे को चाहते है तो वहीं। म ऐसा

इसलिये करते हैं क्योंकि दूसरे को चाहकर भी हम वस्तुतः अपने आत्मप्रेम की ही पूर्ति करते हैं।

5) आवश्यकता या इच्छा पूर्ति के बाद होने वाली तृप्ति हमें इसलिये अनुभव होती है क्योंकि इसका संबंध हमारे आत्मप्रेम से होता है न कि उस चाही गई वस्तु में।

उदा. - भोजन में तृप्ति निहित नहीं है अपितु भोजन करने से हमारे आत्मप्रेम की आवश्यकता की पूर्ति होती है। इसलिये भोजन हमें तृप्तिदायक लगता है।

आलोचना - मनोवैज्ञानिक अहम्वाद की इन मूल मान्यताओं के संबंध में आलोचकों ने कई आपत्तियां उठाई जो सुख, आत्मप्रेम और तृप्ति की प्रक्रिया से संबंधित है। इन आपत्तियों के संबंध में कहा जा सकता है कि यह आपत्तियां नैतिक अहम्वाद को एक मान्य सिद्धान्त मानने में बाधा उत्पन्न करती है। इसलिए मनोवैज्ञानिक अहम्वाद को एक सही सिद्धांत कहना कठिन हो जाता है।

~~अहं वाद के समर्थक~~। नैतिक व मनोवैज्ञानिक अहम्वाद को स्पष्ट कीजिये।